www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 7, 18-20

Article ID: 208

गेलार्डिया की वैज्ञानिक खेती

डॉ. कृष्ण कुमार सिंह*

[1]सहायक प्राध्यापक, महर्षि मार्कंडेश्वर डीम्ड यूनिवर्सिटी, मुलाना, अंबाला, हरियाणा

गेलार्डिया (गिलार्डिया पुलचेला) को नवरंगा के नाम से भी जाना जाता है | ये पुष्प एस्टरेसिया कुल से है इसके पीले, नारंगी, लाल रंगों के फूल आते है| जो आति लुभावने होते है इसिलये इसकी मांग बाज़ार बहूत आधिक रहती है | इसके फूलो का उपयोग माला, गुलदस्ता,घर की सजावट,सामाजिक एवम धार्मिक कार्यो में अधिक किया जाता है | उत्तरी भारत में गेंदा, गुलदाउदी, गुलाब, जैसमीन तथा गैलार्डिया की सफलतापूर्वक खेती की जा सकती है। मौसमी पुष्पों में गेलार्डिया एक महत्वपूर्ण पुष्प है।

जलवायु एवं भूमि - गेलार्डिया की अच्छी उपज के लिए खुली धूप वाली जगह और उचित वायु संचार, गहरी मृदा, उपयुक्त जल-धारण क्षमता तथा **6.0-8.0** पीएच मान वाली भूमि में अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

उन्नत किस्में: गैलार्डिया की दो प्रमुख जातियां है।

पिक्ता: इसमें बड़े आकार के सिंगल फूल आते है।

लोरेन्जिया: इसमें फूल चटकदार पंखुड़ियों वाले, विखंडित कोरो व एक ही फूल में कई आकर्षित रंगों के डबल फूल आते है। लोरोंजियाना की प्रमुख किस्में सनसाइनस्ट्रान और गेटी डबल मिक्सड है। एक अन्य संकर किस्म ट्रेटा पिक्ता हाल ही में विकसित की गई है। इसमें फूल डबल आकार में बड़े और पंखुड़ियों चटकदार चमकीली लाल रंग की पीले किनारों वाली होती है।

बीज की बुवाई एवं मात्रा - गेलार्डिया के पौधे देर से फूल देते हैं और बुवाई के तीन से चार माह पश्चात् फूल आने लगते हैं। आवश्यकतानुसार बीज नर्सरी की क्यारियों में, लकड़ी के खोखों में, गमलों में, मिट्टी के तसलों में एवं प्लास्टिक ट्रे में बोये जा सकते हैं। बीज बोने से पूर्व किसी फफूँदीनाशी दवा जैसे थाइरम या बाविस्टीन आदि से उपचारित कर बोयें। बुवाई के **4** से **6** सप्ताह बाद पौध खेत में रोपाई के लायक हो जाती है। एक हैक्टेयर की रोपाई के लिए **500** से **600** ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

गेलार्डिया की पौध तैयार करना

- गेलार्डिया की पौध तैयार करने के लिये उपयुक्त भूमि का चुनाव किया जाता है तथा क्यारी भूमि की सतह से **10-15** सेंमी. ऊपर उठी होनी चाहिए, जिससे वर्षा के पानी को आसानी से बाहर निकाला जा सके।
- **150** वर्ग मीटर नर्सरी का क्षेत्रफल एक हैक्टेयर के लिए पर्याप्त माना जाता हैं। इसके लिये क्यारियाँ **3** मीटर लम्बी, एक मीटर चौड़ी तथा **10-15** सेंमी. जमीन से ऊपर बनानी चाहिएं।
- उचित आकार की क्यारियाँ बनाने के बाद **30** किलोग्राम वर्मी-कम्पोस्ट या गोबर की खाद प्रति क्यारी के हिसाब से मिलायें।
- क्यारियों में खाद को अच्छी तरह मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें ताकि खरपतवारों का अंकुरण फसल से पहले हो जाये तथा उनका नियंत्रण आसानी से किया जा सके।
- गेलार्डिया की फसल की पौध हमेशा खुले में तैयार करनी चाहिए ताकि पौधो को आवश्यकतानुसार प्रकाश एवं वायु उपलब्ध हो सके।
- इसके बाद क्यारियों को कवकनाशी से उपचारित करें ताकि पौधों को कवक के प्रकोप से बचाया जा सके। कवकनाशी के लिये **2** ग्राम/लीटर पानी मे बाविस्टीन डाल कर छिड़काव करें।
- इसके बाद बीज की बुवाई करें जिसमें पौधे से पौधे की दूरी **3** सेंमी. तथा लाइन से लाइन की दूरी **5** सेंमी. रखें। बीज की गहराई **2** सेंमी. से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।
- **5-7** दिन के बाद बीज का अंकुरण होना शुरु हो जाता है।
- नर्सरी मे पौधों को कीटों से बचाने के लिए **2** मिलीलीटर डाइमिथोएट (रोगोर) या **5** मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।
- जब पौधा **7-10** सेंमी. की ऊँचाई का या **3-4** सप्ताह का या **4-5** पत्ती आने पर खेत के अन्दर स्थानान्तरण कर देना चाहिए।
- नर्सरी से खेत मे पौध का स्थानान्तरण शाम के समय करना चाहिए ताकि पौधा आसानी से खेत में स्थापित हो जाये तथा स्थानान्तरण के तुरन्त बाद सिंचाई कर देनी चाहिए।

खेत की तैयारी - खेत की **3** से **4** जुताई करें और पाटा लगाकर खेत को समतल कर लें। अंतिम जुताई के समय **10-12** टन गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में डालनी चाहिए। सिंचाई के लिए सुविधानुसार खेत में क्यारियाँ बना लेनी चाहिएं।

पौध की रोपाई - गेलार्डिया के पौधों की रोपाई समतल क्यारियों में की जाती है। पौध की रोपाई **60** सेंमी. लाइन से लाइन एवं **45** सेंमी. पौधे से पौधे की दूरी रखकर करनी चाहिए।

सिंचाई एवं उर्वरक - गेलार्डिया में सही समय पर सिंचाई करने पर पुष्प खिलते रहते हैं। अतः भरपूर पुष्प लेने के लिए उर्वरकों का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। **200** किलोग्राम यूरिया, **400** किलोग्राम सुपर फॉस्फेट, **100** किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश उर्वरक प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। गोबर की खाद, सुपर फॉस्फेट व म्यूरेट ऑफ पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा व यूरिया की आधी मात्रा रोपाई के पूर्व डालें। यूरिया की शेष आधी मात्रा **45** दिन पश्चात् खड़ी फसल में दें। यूरिया देने के बाद सिंचाई अवश्य करें।

निराई-गुड़ाई - इस फसल में दो तीन बार गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट करें। गुड़ाई करते समय पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ाएं। समय-समय पर निराई-गुड़ाई कर खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें।

व्याधि प्रबंध

जड़ गलन - इस रोग से पौधों की जड़ें सड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु कैप्टान **2** ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से भूमि को उपचारित करें।

फूलों की तुड़ाई एवं उपज - पौधों की रोपाई से **3** से **4** महीने बाद पुष्प खिलने शुरु होते हैं। पुष्पों की तुड़ाई समय पर करते रहना चाहिए। हर चौथे रोज पुष्पों की तुड़ाई करें जिससे आगे पुष्प निरंतर बनते रहें। पुष्प चुनते समय ध्यान रहे कि सभी पूर्ण विकसित पुष्प तथा डोडे पौधों पर छूटने न पायें। प्रति हैक्टेयर **100** से **150** क्विंटल पुष्पोत्पादन प्राप्त होगा।